647510 **BRSHinEC618D** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 6 (*CBCS*) Examination
March/April -2020
HINDI (ELECTIVE-18)

Time: 2:00 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. Answer any four of the following questions.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न-१ यशोधरा काव्य के प्रेरणा श्रोत पर प्रकाश डालते हुए कवि के द्वारा किये गए परिवर्तन की चर्चा कीजिए। (१४)

अथवा

प्रश्न-१ यशोधरा काव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखे।

प्रश्न-२ यशोधरा काव्य के आधार पर यशोधरा के व्यक्तित्व की विशेषता बताईए। (१४)

अथवा

प्रश्न-२ यशोधरा काव्य का भावपक्ष – कलापक्ष चित्रित कीजिए।

प्रश्न-३ निम्नांकित संदर्भोमें सें किन्ही तीन लिखे। (१४)

(1) होता सुख का क्या – मूल्य जो न दु:ख रहता?
प्रिय-हद्रय-सदय हो व पस्ताप क्यों सहता?
मेरे नयनों से नीर न यदि यह बहता,
तो शुचक प्रेम की बात फिर कौन कहता?

(2) सिद्धि – मार्ग की बाधा – नारी, फिर उसकी कथा गबि है?
पर उनसे पूछुँ क्या, जिनको मुझसे आज विरति है।
अर्ध विश्वमें व्याप्त शुभाशुभ – मेरा – भी – प्रभु पति है।
मैं भी नही अनाथ, जगतमें, मेरा भी प्रभु पति है।

(3) चार – चुडियाँ ही हाथों में पडी रहे, चिरकाल,
मेरी मलिन गुदडीमें भी है, राहुल – सा लाभ।

(4) वह – जन्म शरण का भ्रमण भाण,
मैं देख चुका हुँ अपरिणाम,
निर्वाण – हेतु मेरा प्रयास?
क्या वात – वृपिद क्या शीत – धाम?
ओ क्षणभंगुर भव, राम – राम ॥

(5) दीन – न – हो गोपे, सुनो हीन नहीं नारी कभी,
भूत – दया – मूर्ति वह मन-से-शरीर से,
क्षील हुआ वनमें क्षुधा – से मैं विशेष जब,
मुझको बयाया मातृजाति ने ही खीर से ॥

प्रश्न-४ यशोधरा काव्य में चित्रित – नवयुग का प्रतिबिंब चित्रित कीजिए। (१४)

अथवा

प्रश्न-४ यशोधरा खंडकाव्य के कवि मैथिलीशरण गुप्त का जीवन परिचय लिखे।

प्रश्न-५ निम्नांकित परिच्छेद का अनुवाद कीजिए (१४)

भ्रस्टाचार अंतत: दो बातों पर निर्भर करता – अपूर्ण इच्छा पर और इच्छा पूर्ति के अनुचित अवसर पर। यदि आप उतने ही पाँव फैला रहे है। जितनी आप की चादर है तो आप को भ्रष्ट्राचार का प्रलोभन नहीं मिलेगा या आप के मन में कोई अपूर्ण – इच्छा तो हो, किंतु उसे अनुचित ठंग से पूरी करने का अवसर न मिले तो भी आप भ्रष्ट्राचार से बच सकेगें। हमें उन्नत और आदर्श जीवन व्यापन के लिए सदाचार का पालन करना होगा और भ्रष्ट्राचार से बचना होगा। सच्चा धर्म सदाचार पर निभर है। धर्म का जन्म आचार से होता है। सदाचार धर्माचरण है और – भष्ट्राचार पापाचरण है।

****